बड़े लोगों का बचपन

केनेथ कौंडा - जाम्बिया के राष्ट्रपति

जब केनेथ कौंडा बहुत छोटे थे, तो उनके पिता ने उन्हें एक दिन लड़ते हुए पाया और उनकी पिटाई की जो उन्हें हमेशा ज़िंदगी भर याद रही. केवल वही एक समय था जब उनके पिता ने उन्हें पीटा था, क्योंकि मिस्टर कौंडा एक दयालु व्यक्ति थे. लेकिन वो चाहते थे कि उनके बच्चे सीखें कि उन्हें हमेशा शांतिपूर्ण तरीकों से ही अपनी मनचाही चीजों को पाने की कोशिश करनी चाहिए.

30 से अधिक वर्षों के बाद, जब केनेथ कौंडा उत्तरी रोडेशिया के लिए स्वशासन जीतने की कोशिश कर रहे थे, तो उन्हें अपने पिता की शिक्षा याद आई. ऐसे लोग थे जिन्होंने उनके धैर्य के लिए उनकी कड़ी आलोचना की, लेकिन उन्होंने कभी भी हिंसा की अनुमति नहीं दी. बाद में उत्तरी रोडेशिया, बहुत कम रक्तपात के साथ जाम्बिया गणराज्य बन गया.

मिस्टर कौंडा एक मिशनरी थे जिन्हें न्यासालैंड (अब मलावी) से उत्तरी रोडेशिया भेजा गया था. अन्य मिशनरियों के साथ, उन्होंने चिनसाली जिले में ईसाई लोगों की देखभाल की. एक पादरी के रूप में उनका एक काम गांवों का दौरा करना था. जाने से पहले, वो हमेशा अपनी पत्नी और पांच बच्चों को एक-साथ प्रार्थना करने और कुछ भजन गाने के लिए बुलाते थे.

केनेथ को गायन से प्यार था और कभी-कभी वो अपने पिता की नकल करते थे. वो परिवार में सबसे छोटे थे और किसी की भी परवाह नहीं करते थे.

एक मिशनरी के रूप में मिस्टर कौंडा ज्यादा पैसा नहीं कमाते थे इसलिए उनकी पत्नी अपना सारा भोजन घर के बड़े बगीचों में ही उगाती थीं. केनेथ के बड़े भाइयों ने दस मील दूर एक नदी के तल में धान उगाने में मदद की. परिवार के पास लुबवा गाँव के पास खेत का एक बड़ा टुकड़ा भी था, जहाँ वे रहते थे.

उनके आस-पास का इलाका पहाड़ी था और मिट्टी बहुत खराब थी इसलिए स्थानीय लोगों ने "चितामे" नामक खेती की एक विशेष विधि विकसित की थी.

लोग शुष्क मौसम में जंगल से शाखाओं को काटते थे और उन्हें धीरे-धीरे जलने के लिए आग जलाते थे ताकि वे खरपतवारों को मार दें और मिट्टी को बहुमूल्य राख से ढक दें. फिर जब बारिश आती तो वे बीज बोते थे

कौंडा का घर हमेशा अपने से गरीब लोगों के लिए खुला रहता था. अक्सर उनके साथ कई अन्य लड़के रहते थे जो दूर-दूर से मिशन स्कूल में पढ़ने आए थे.

केनेथ का पहला स्कूल खुली हवा में एक पेड़ के नीचे था. सभी बच्चे जमीन पर पर बैठते थे. वहां पर एक बड़ी चादर जिसे "नसलू" कहा जाता था लटकाई जाती थी. हर कोई उसे देख सकता था. उस चादर पर अंग्रेजी वर्णमाला और सरल वर्तनी के अक्षर होते थे.

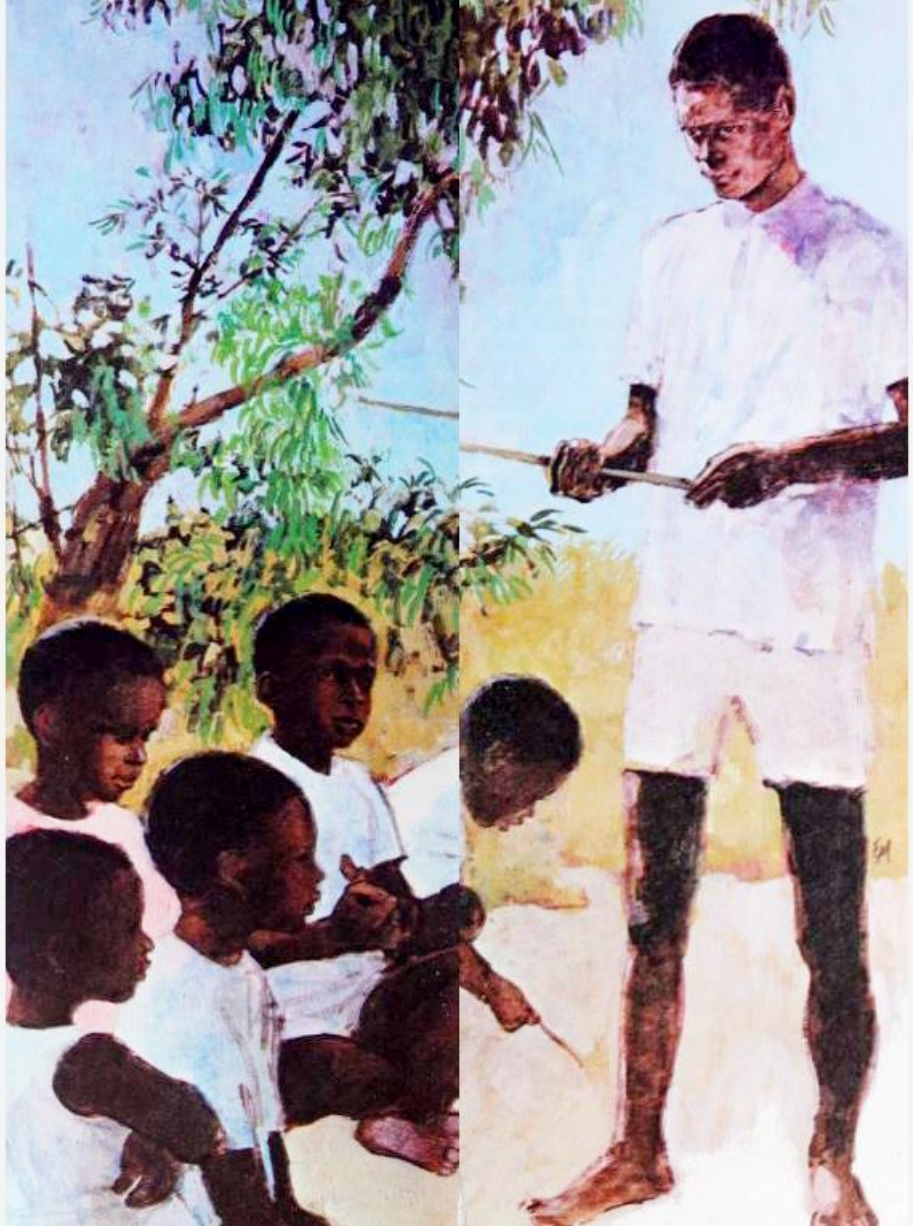

शिक्षक अपनी छड़ी से अक्षरों की ओर इशारा करता था और फिर छोटे बच्चे उन सभी को एक-साथ दोहराते थे. वो उन अक्षरों की अपने बगल में, धूल में नकल करते थे. जब उसने नसलू I, II और III सीख लिया था फिर उसे उचित स्कूल में जाने और स्लेट का उपयोग करने की अनुमति मिली.

केनेथ के पिता की मृत्यु तब हुई जब वह आठ वर्ष के थे. फिर वो लंबे समय तक वे बहुत दुखी रहे. उनके सेहत बहुत अच्छी नहीं थी, और उन्हें सिर और पैरों पर घावों के कारण अस्पताल में बहुत समय बिताना पड़ा. वो अक्सर मलेरिया से भी बीमार रहते थे. अपनी परेशानियों के बावजूद उन्हें फुटबॉल का शौक था और वे अपने गांव की टीम के लिए खेलते थे.

जब वो स्कूल में नहीं होते तो केनेथ अपने भाई-बहिनों के साथ घर और खेत में सहायता करते होते थे. कभी-कभी वो पानी लाने कुएं तक दो मील चलकर जाते थे, या फिर जंगल में जलाऊ लकड़ी लेने के लिए बहुत दूर जाते थे.

उन्होंने बाजरा पीसना, झाड़ू लगाना, सफाई करना और अपने कपड़े धोना और इस्त्री करना भी सीखा. लड़कों के लिए ऐसा काम करना बहुत ही असामान्य बात थी लेकिन परिवार को एक साथ रखने के लिए उनकी माँ को हर तरह की मदद की ज़रूरत थी.

वो अन्य लड़कों की तुलना में बहुत कम उम्र में मिडिल स्कूल गए पर तब स्कूल की फीस 2/6 से 30/- तक उछल कर बढ़ गई. जबकि कई लड़कों ने पैसे की कमी के कारण हार मान ली, लेकिन केनेथ को मिशन में काम मिला, 10/- प्रति महीने - खाई खोदने का.

लेकिन केनेथ के जीवन में सिर्फ काम ही नहीं था. उनके भाई ने उन्हें ऑटो-हार्प नामक 21 तार वाला वाद्य यंत्र बजाना सिखाया. केनेथ उसे इतना अच्छा बजा सकते थे कि उनके सभी दोस्त उस संगीत पर नाचते थे. अक्सर वो खुद अपने गाने बनाते थे.

केनेथ ने मिडिल स्कूल में इतना अच्छा प्रदर्शन किया कि उन्हें मुनाली में सैकड़ों मील दूर एक नए माध्यमिक विद्यालय में दाखिला मिल गया. वो बड़ा उत्साहित था क्योंकि उसने पहले कभी अपना जिला नहीं छोड़ा था: और अपने जीवन में पहली बार वो एक ट्रेन देखने जा रहा था. रेल में बैठने से पहले उसे कई दिनों तक लॉरी से यात्रा करनी पड़ी. अक्सर सड़क विशाल चींटी-पहाड़ियों के बीच में कटिंग में से होकर गुज़रती थी.

मुनाली में, केनेथ ने सबसे पहले अपनी लीडरशिप की शक्ति की खोज की. उन्होंने अपनी पढ़ाई में कड़ी मेहनत की, वो पाथफाइंडर्स (एक प्रकार के बॉय-स्काउट्स) में शामिल हो गए और उन्होंने सभी वाद-विवाद यानि डिबेट्स में भाग लिया.

एक शिक्षक ने उन्हें गिटार बजाना सिखाया, और एक गर्मी की छुट्टी में उन्होंने तांबे की खदानों का दौरा किया. वहां उन्होंने बहुत सारा पैसा कमाया लेकिन घर वापिस आते समय वो सब चोरी हो गया!

केनेथ अंत तक स्कूल में नहीं पढ़ सके क्योंकि उनके पास पैसे की बहुत कमी थी, इसलिए उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और एक स्कूली शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया. बाद में केनेथ कौंडा वो जाम्बिया के राष्ट्रपति बने.